Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में आर्थिक चेतनाः

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में आर्थिक चेतनाः

Dr. Rekha Rani Zood

Assistant Professor (Hindi), Babu Anant Ram Janta College of Education, Kaul (Kaithal)

----------X----------

वर्तमान में सामाजिक सम्बन्धों का आधार प्रमुखतः अर्थ बन गया है। पहले जहाँ आपसी सम्बन्धों का निर्धारण नैतिक मूल्यों और मान्यताओं पर टिका होता था। उसका स्थान आज अर्थ ले चुका है।

अर्थ यूँ तो पुरातन काल से ही प्रभावी रहा है, परन्तु वर्तमान काल में जीवन का आधार अर्थ बन गया है। वस्तुतः अर्थ को पौराणिक आधार पर धर्म और बुद्धि से उत्पन्न माना गया है।

अर्थ केवल आर्थिक रूप से ही न होकर भूमि (धरती) से भी लिया गया है। भारतवर्ष कृषि प्रधान देश रहा है। इसलिए यहाँ धरती को माँ की संज्ञा दी गई है। इसी विचार से विश्व प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री व राजनीतिज्ञ 'कौटिल्य' ने धरती को मनुष्यों की आजीविका का साधन माना है। उनके इसी मत की पुष्टि में डा. अच्युतानंद कहते हैं कि –"समयान्तर से अर्थ के स्वरूप में परिवर्तन आता है। इसलिए भूमि, पशु और विद्या तीनों समयानुसार अर्थ माने गए हैं। इस प्रकार मूल्यवान वस्तु अर्थ कहलाती है। संसार के सभी व्यवहारों में अर्थ को मुख्य माना गया है क्योंकि सभी कार्य व्यापारों की प्राप्ति हेतु इसकी आवश्यकता पड़ती है।"1

अर्थ के सैद्धान्तिक पक्ष पर विचार करने के बाद अब यदि उसके व्यावहारिक पक्ष पर चर्चा करें तो पायेंगे कि आज मनुष्य का जीवन अर्थ के बगैर परिभाषित नहीं किया जा सकता। जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के प्रत्येक मोड़ पर अर्थ महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। मनुष्य ही नहीं अगर हम राष्ट्र की बात करें तो विश्व में उसकी स्थिति अर्थव्यवस्था तय करती है और जब राष्ट्र आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा तो वहाँ की जनता का जीवन–स्तर भी ऊँचा होगा। समकालीन भारतीय अर्थ व्यवस्था आदर्श अर्थव्यवस्था नहीं कहला सकती। अर्थ का वितरण असमान है जिस वजह से धनी और निर्धन के बीच खाई लगातार बढ़ती ही जा रही है। एक तरफ गरीब एक वक्त की रोटी के लिए संघर्षरत है और दूसरी तरफ अमीर काले धन के बल पर ऐशो–आराम का जीवन व्यतीत करता हुआ पानी की तरह पैसा बहा रहा है, भ्रष्टाचार के इस दौर में ईमानदारी शब्द मजाक बन गया है।

21वीं सदी की चकाचौंध ने आज हमारी अर्थव्यवस्था में मनुष्य को आत्मकेन्द्रित तो बना दिया है पर उसको पाने के मार्ग सीमित हैं। सही रास्तों के अभाव में वह अनुचित साधनों का प्रयोग कर धन कमाना चाहता है और अपनी सभ्यता व संस्कृति को छोड़ आज भौतिक सुख–साधनों में इतना लिप्त हो चुका है कि हर पल मानसिक तनाव में जी रहा है। युवाओं का लगातार विदेशों की ओर पलायन करना भी अर्थ की समस्या के कारण हो रहा है, जिसके कारण हमारी बौद्धिक और शारीरिक ऊर्जा भी विदेशों के योगदान में उपयोग हो रही है। अर्थ के अनावश्यक महत्त्व ने चोरबाजारी, लूटखसोट, भ्रष्टाचार को समाज के हर कोने में पहुंचा दिया है। मृणाल जी एक संवेदनशील साहित्यकार व जागरूक पत्रकार है जो कि उन्हें समाज के प्रत्येक पक्ष से जोड़ती है। अर्थ समाज का महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिस पर मृणाल जी की दृष्टि भी गई है और उसे अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। उनके उपन्यासों में स्थान–स्थान पर अर्थ सम्बन्धी विचार दृष्टिगोचर होते हैं।

समाज और अर्थव्यवस्था :

समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए अर्थ सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। धन व श्रम का समान वितरण ही समाज को असंतोष, अनाचार व विद्रोह की स्थितियों में बचाता है। भारतीय समाज में वर्गों का महत्त्व शुरू से ही रहा है। परन्तु यदि व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो समाज में केवल दो ही वर्ग स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं। पहला अमीर और दूसरा गरीब। इन दोनों के विभाजन का आधार भी अर्थ प्राप्ति ही है। अधिक अर्थ प्राप्ति वाला वर्ग अमीर और कम अर्थ की प्राप्ति वाला वर्ग गरीब कहलाता है। वर्णव्यवस्था का मूलाधार भी कर्म और वर्णों से अधिक अर्थ ही दिखाई पड़ता है, क्योंकि समाज में यदि किसी निम्न जाति के व्यक्ति के पास भी पर्याप्त मात्रा में धन है तो समाज में उसका भी वही सम्मान है जो अमीर वर्ग का है। इस प्रकार अर्थ ही सामाजिक सम्बन्धों का आधार है।

आधुनिक जीवन में समाज में प्रत्येक कार्य अर्थ के बल पर ही पूर्णता को प्राप्त करता है। आज समाज में धर्म, साहित्य, राजनीति किसी को भी अर्थ से अलग करके देखना सम्भव नहीं हैं। पूरी की पूरी समाज व्यवस्था इसके बिना डगमगा जाती है। अर्थ के बिना समाज भाग्यवाद जैसी अकर्मण्य की स्थितियों में अटका रहता है, जबकि अर्थ प्राप्ति पर वह समाज की अस्वस्थ परम्पराओं को तोड़कर स्वस्थ परम्पराओं का निर्माण करता है। अर्थ के कारण ही अमीर आदमी का समाज में श्रेष्ठ स्थान रहा है। अर्थ व्यक्ति के सभी दुर्गुणों को छुपा देता है। इसका सशक्त आज के नेता व धार्मिक संस्थाओं के संचालक हैं जो विभिन्न दुर्गुणों के होते हुए भी समाज में सम्मानीय पद प्राप्त किए हुए हैं।

वर्तमान समाज में अर्थ के कारण गरीबी, परिवारों का विघटन, युवाओं का विदेशों में पलायन व आत्मसम्मान तक को बेचने जैसी समस्याएँ बनी हैं। मृणाल जी ने समाज में अर्थ के महत्त्व को समझा है और विभिन्न स्थानों पर उनके इस पक्ष को लेकर विचार दृष्टिगोचर होते हैं। समाज का अर्थ से गहरा सम्बन्ध है जिसके कारण व्यक्ति को अर्थ प्राप्ति के लिए विभिन्न मार्गों को

www.ignited.in

अपनाना पड़ता है। अर्थ वर्तमान में व्यक्ति की पहली आवश्यकताओं में से एक है। इसकी प्राप्ति के लिए व्यक्ति कोई भी कदम उठाने को तैयार हो जाता है। मृणाल जी के उपन्यासों में अर्थ का महत्त्व व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है। उनके उपन्यास 'देवी' में अर्थ प्राप्ति के कारण युवाओं का विदेशों के प्रति रुझान व उसके कारण रिश्तों में आए तनाव को व्यक्त किया गया है–

"ललिता दादा की तरफ से उनके बेटे, अपने पिता को पत्र लिखती। वे अपने घोर सनातनी परिवार से लगभग नाता तोड़कर विलायत जा बसे थे, पत्र की अंतिम पंक्तियों के लिए ललिता को दादा को कोंचना पड़ता। लंबी चुप्पी के बाद वह बूढ़ा ब्राह्मण कहता , अब और कुछ नहीं है लिखने को। बस यह कहना है कि अब किसी मेम से ब्याह करके मेरा और अपमान मत करवाना। मेरी इच्छा है कि मृत्यु के समय तुम मुझेसे दूर ही रहो।. . . दादा को गोरे म्लेच्छों की भाषा अंग्रेजी से नफरत थी। जिसके देश की माया से खिंचा उनका इकलौता बेटा उनसे दूर चला गया था।"2

इसी उपन्यास में एक अन्य स्थान पर समाज में अर्थ के महत्त्व को दिखाया है कि किस प्रकार अर्थ प्राप्ति के कारण व्यक्ति को अपने आत्मसम्मान तक को बेचना पड़ता है। अर्थ जीवन की प्रथम आवश्यकता बन चुका है और यह व्यक्ति को किसी भी हद तक पहुंचा देता है–"रेवती कलकत्ता के एक चकले में रहती है। उसका परिवार दूर के एक गाँव में रहता है, जहाँ उसकी माँ उसके असफल विवाह से जन्मी बेटी को पाल रही है। रेवती हर माह नियम से पैसा घर भेजती है। दुर्गा पूजा और काली पूजा के अवसर पर पूरे परिवार के लिए नए कपड़े बनवाने के लिए अलग से पैसा भेजती है।"3

पैसे की कमी के कारण गरीब माँ–बाप अपने बच्चों से भी काम करवाते हैं। जो उम्र उनकी पढ़ने–लिखने की होती है उनका वह मासूम बचपन मजदूरी करने में निकलने लगता है। गरीबी के कारण उनको अपना बचपन जीने का मौका भी नहीं मिलता। मृणाल जी के उपन्यास 'हमका दियो परदेस' में इसी समस्या का चित्रण किया है–"उसकी मुस्कुराहट रूखी–सूखी है। और अब अब्बा के इस्लामिया होटल (लोग उसे ढाबा कहते हैं) के गंदे चीकर बर्तन माँज–माँज कर गंदे हुए नाखूनों वाले बड़े–बड़े हाथ हैं।. . . तड़के ही अब्दुल्ला को होटल के सामने वाली सड़क पर झाड़ू लगाकर, मशक से पानी छिड़कना पड़ता है।"4

अतः स्पष्ट है कि समाज का अर्थ से घनिष्ट सम्बन्ध है। यदि यह कहा जाए कि अर्थ समाज में व्यक्ति की जीने के लिए प्रथम आवश्यकता बन चुकी है तो गलत नहीं होगा। अर्थ के कारण समाज में हिंसा व भ्रष्टाचार जैसे अनैतिक कार्य हो रहे हैं, जिससे सामाजिक व्यवस्था को खतरा पैदा हो रहा है। इसके कारण रिश्तों में दूरी बढ़ रही है। अर्थ के कारण ही व्यक्ति कोई भी अनैतिक कार्य करने को तैयार हो जाता है। अर्थ व्यक्ति की समाज में आने के बाद प्रथम आवश्यकता है किन्तु फिर भी इसको प्राप्ति के लिए गलत रास्ते से बचना चाहिए। सरकार को भी समाज में समानता लाने का प्रयास करना चाहिए।

कृषि आधारित अर्थ–व्यवस्था :

प्राचीन युग से ही कृषि का महत्त्व चला आ रहा है, क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसकी 80 प्रतिशज जनसंख्या गाँव में निवास करती है और उसकी आय का मुख्य साधन कृषि ही है। 'रामायण' जैसे प्राचीन ग्रन्थों में भी कृषि को प्रमुख स्थान दिया गया है। उस समय भी लोग कृषि, शिल्प, व्यापार आदि अनेक साधनों के द्वारा अपनी आजीविका कमाते थे परन्तु आय का मुख्य स्त्रोत कृषि ही था। रामायण काल में राजा कृषि की तरफ पूरा ध्यान देता था। राजा जनक द्वारा अकाल में हल चलाया जाना और धरती से सीता जैसी पतिव्रता नारी का उत्पन्न होना इसी बात की ओर इंगित करता है। राम भी भरत से अरण्य मिलाप के समय राज्य और कृषि सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करते हुए यह स्वीकार करते हैं–"कृषि एवं व्यापार से जुड़ा रहने पर ही मनुष्य सुखी एवं उन्नतशील होता है, भरत तुम खेती के लिए राज्य के सभी वैश्यों को खुश रखते हो या नहीं।"5

उत्पादित अन्न को कृषक अपने इस्तेमाल के लिए रखते थे परन्तु अतिरिक्त धान्य को वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाजार में विक्रय करते थे। कृषि प्रधान गाँव–नगरों के बीच में अनाज और फल की बिक्री हेतु अधिक दूरी नहीं थी। इस प्रकार का वर्णन भी रामायण में तब आता है जब सुमन्त्र राम को वन में छोड़ने के बाद ग्रामों व नगरों को देखते हुए लौटे थे।"6 वर्तमान भारत में भारत एक कृषि प्रधान देश ही है और इसकी अधिकांश आय का स्त्रोत कृषि ही है। कृषि के माध्यम से ही भारत की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या को आजीविका प्रदान होती है।

आधुनिकता के दौर में कृषि करने के तरीकों में बदलाव आया है और कृषि में वैज्ञानिक तरीकों को अपनाया जा रहा है। किन्तु फिर भी भारत की अधिकांश जनसंख्या की आय का स्त्रोत कृषि ही है। मृणाल जी ने अपने उपन्यास साहित्य में कृषि की महत्ता को समझते हुए और अर्थ प्राप्ति में इसके योगदान को ध्यान में रखते हुए इसका चित्रण किया है–

"जमीन ऐसी ठहरी, सुना कि बाएं हाथ से आँख बन्द करके भी नाज छींट दो तो ऐसी फसल हो जाने वाली हुई कि कहाँ जो धरो, वैसे जो सिमेटी। सालम में होने वाली हुई बासमती, खतेड़ा में चरस, मछियाड़ में गेहूँ, पाडास्यूँ में दूध–दही। फिर कलरवाण की मूली, चौंसाल के पिनालू (अरबी) और गोस्नी का हरा धनिया पहाड़ों में वार–पार (यहाँ से वहाँ) मशहूर ठहरे ही।"7

अतः स्पष्ट है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ कि अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और उसकी आय का मुख्य साधन कृषि ही है। सरकार को कृषि व किसानों के सुधार पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए, क्योंकि वह भारत की आय का आधार है।

अर्थोपार्जन की अन्य व्यवस्थाएँ :

जिस प्रकार किसान की आय आजीविका का साधन कृषि है उसी प्रकार अन्य जातियाँ भी अपनी आजीविका चलाने के लिए अलग–अलग कार्य करती हैं। ब्राह्मण, वैश्य, नाई, धोबी, चमार सभी अपने निश्चित कार्य करके अपनी गुजर–बसर करते हैं।

आधुनिक समय में भी व्यक्ति अर्थ प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं और जीवनयापन करते हैं। मृणाल जी ने अपने उपन्यासों में अर्थ प्राप्ति के अन्य साधनों का वर्णन किया है। वर्तमान में लोग कृषि के अलावा भी विभिन्न साधनों से धन प्राप्ति करते हैं। उनके उपन्यास 'पटरंगपुर पुराण' में कई स्थानों पर अर्थोपार्जन की अन्य व्यवस्थाओं का चित्रण हुआ है–"हाँ राजा के साथ में और भी आए। आए रेशम के कारीगर। चीन देश से कीमू (शहतूत) के पेड़ पर पलने वाले रेशम के कीड़ों की पिटारी ले–लेकर। एक मुहल्ले का मुहल्ला इन कारीगरों का बसाया

www.ignited.in

गया। दिन–रात बुनने वाले हुए वे राजा जी और दरबारियों के लिए रेशमी पट्ट।"8

एक अन्य स्थान पर वैद्यकी की विद्या द्वारा आजीविक कमाने का चित्रण–"रामदज्जी गुणवंता ठहरे। उनका वैसे औरी जो आदर हुआ इलाके में। उन्हें सब कहने वाले हुए गुरु। वैद्यकी जानने वाले हुए ही रामदज्जी, जनम–मरण सबका टैम बता दें, ऐसी विद्या हुई उनमें। घर पर रोगियों की दिन–रात अपरम्पार भीड़।"9

एक अन्य स्थान पर –"तब शहर में चार धोबी ठहरे–लल्लन, नब्बन, छदामी और भूरे। सारे शहर की धुलाई इन्हीं को जाने वाली ठहरी। सोहनलाल रेफूजी ने ही पहली बेर चलाई ठहरी शहर में दि गुड–लक लौंड्री। . . . फिर पाँचेक साल में दुकान के दो हिस्से कर दिए उसने। एक में उसकी लड़की और घर वाली बैठने वाले हुए, इस्नो, किलिप–पौडर, ऊन ऐसी, औरतों के काम की चीजें ठहरीं। इधर–दूसरी तरफ लौंड्री हुई ही। बच्चों की पसंद पन्नी में लपेटी वाली बिलैती मिठाई भी मिलने वाली हुई उसमें।"10

एक अन्य स्थान पर कपड़े सिल कर आजीविका कमाने का वर्णन है–"सालेक में फराफर पहाड़ी सीख के सोहन धोबी की घरवाली ने अपने घर में जै माता–सिलाई–कढ़ाई केंद्र भी खोल लिया। . . . पहले शहर के ढोली–दर्जी, मोटे–मोटे, ढीले तकिए के गिलाफ जैसे सलूके सिलने वाले हुए औरतों के लिए। फिर औतार सिंह की लाहौर टेलरिंग वाली दुकान खुल गई, तो औरतों की भी आँखें जैसी खुल गईं। नई काट की पैंटें कहो तो पैंटें, बुस्सकोट कहो तो वो, अद्‌भुत कारीगरी से बनाने वाला हुआ औतारी। कोट के अस्तर में दो एश्ट्रा बटन भी लगा देने वाला हुआ कि 'बाप सैप, (बाबूजी)' ये बाहरिए बटन कभी इधर–उधर टपक गए तो घर वाली उन्हें लगा देगी, करके।"11 उनके उपन्यास 'अपनी गवाही' में भी आजीविका कमाने के विषय में चर्चा की गई है–"और काफी समय बाद जब कृष्णा ने अपना अध्यापन का काम छोड़ कर एक हिन्दी समाचार एजेंसी में काम करने के फैसले की जानकारी देने के लिए फोन किया तो उसे लगा जैसे माँ को इस तरह की खबर का अन्देशा काफी पहले से था।

हाँ, पार्वती ने कहा, "काम तो बढ़िया लगता है," फिर थोड़ा रुककर, "लेकिन तुझे बड़ी देर–देर तक काम करना होगा? पोलिटिकल प्रेशर होंगे? थानों और दंगाग्रस्त इलाकों के चक्कर लगाने होंगे?"12

इस प्रकार कृषि के अलावा भी अर्थ प्राप्ति के बहुत–से साधन समाज में अपनाए जाते हैं, जिसमें नौकरी, व्यापार व विभिन्न प्रकार के छोटे–छोटे कार्य है जो कि लोगों ने अपनी सुविधा के अनुसार अपना लिए हैं। अर्थ जीवन की मुख्य आवश्यकता है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति आजीविका प्राप्त करने के लिए कोई–न–कोई साधन अपनाता है।

आर्थिक शोषण :

वर्तमान समय बदलाव का समय है। इसमें व्यक्ति पहले अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है और बाद में दूसरी चीजों की। वह अपने स्वार्थ के कारण दूसरे व्यक्ति के हितों से भी खिलवाड़ करने से पीछे नहीं हटता। बड़ा सदैव छोटे के हितों की अवहेलना करके अपने लाभ प्राप्ति के रास्ते ढूंढता है। धन के लालच में व्यक्ति अनैतिक कार्य करने से नहीं डरता व गलत रास्ते को पकड़कर वह अपने से कमजोर का शोषण करता है। आधुनिक समय में इस प्रकार का शोषण अत्यधिक दृष्टिगोचर होता है, क्योंकि व्यक्ति लालच के वश में आकर मानवता को भूल रहा है–"हाँ–हाँ, सरकारी महकमों का खूब जोर रहा, पर नाम–ही–नाम ठहरा उनका। पटरंगपुर कताई–केंद्र से लेकर पटरंगपुर फल–उद्यान और संरक्षण केंद्र तक, सब में रहा–सहा माल जेबों में डालते हैं बड़े–बड़े लोग–बाग और लमालम चल देते हैं नीचे देस की ओर।. . . बड़े अफसर लोग देस से अपनी चमचमान सरकारी गाड़ियों में औरी बिन्दु–इन्दु जैसी खपसूरत मेम साहबों को ले–लेकर आते हैं और हमारे पटरंगपुर वाले हाथ जोड़े उन्हीं की अगाड़ी–पिछाड़ी करते रह जाते हैं। ऊन के गलीचे हुए, दन हुए, पश्मीने की चद्दरें ऊनी थुल्मे हुए, कार्तिकी शहद हुआ। सब सरकारी गाड़ियों में अफसरों के साथ नीचे चला जाता है। हमारे लिए रह जाते हैं। पत्थर जैसी कांठी अखरोट और मलेशिया के मोटे थान।"13

अतः वर्तमान समय अर्थ को अधिक महत्त्व देता है व्यक्ति को नहीं। आज व्यक्ति की पहचान उसके गुणों से नहीं आर्थिक सम्पन्नता से आंकी जाती है। वर्तमान भौतिकवादी समाज में व्यक्ति अपनी पहचान बनाने के लिए नैतिक, अनैतिक कुछ भी कार्य करने को तैयार हैं।

सदर्भ सूची :

1. डॉ. अच्यूतानन्द घिल्ड़ियाल, प्राचीन भारतीय अर्थ विचारक, पृ. 181
2. मृणाल पाण्डे, देवी, पृ. 66–67
3. वही, पृ. 82
4. वही, हमका दिया परदेस, पृ. 54–55
5. जगदीश चन्द्र भट्ट, रामायण कालीन समाज एवं संस्कृति, पृ. 36
6. वही, पृ. 36
7. वही, पटरंगपुर पुराण, पृ. 9–10
8. वही, पृ. 14
9. वही, पृ. 11–12
10. वही, पृ. 124–125
11. वही, पृ. 125–126
12. वही, अपनी गवाही, पृ. 19
13. वही, पटरंगपुर पुराण, पृ. 123–124